'अट्ठाइसवें कलाकोश स्थापना दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम एवं व्याख्यान का संक्षिप्त विवरण

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के द्वारा संस्था के २८वें स्थापना दिवस (गुरु पूर्णिमा) के अवसर पर पार्श्वनाथ विद्यापीठ स्थित कार्यालय की तरफ से १९ अगस्त को प्रथमत: पूजन तत्पश्चात् वृक्षारोपण एवं २०अगस्त को अपराह्न ३ बजे से ५ बजे तक व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें प्रो० कौशलेन्द्र पाण्डेय, अध्यक्ष, साहित्य विभाग, प्राच्यविद्या धर्मविज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने ''भरतमुनि और उनका नाट्यशास्त्र'' विषय पर व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम का आरम्भ पं० पट्टाभिरामशास्त्री वेदमीमांसा अनुसंधान केन्द्र के वेदपाठो बटुओं द्वारा प्रस्तुत वैदिक मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात् संगोष्ठी में उपस्थित विभिन्न विद्वानों एवं संस्था के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी के द्वारा माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन किया गया जिसमें डा० रमा दुबे ने सहयोग किया। डा० नरेन्द्रदत्त तिवारी ने स्वागत भाषण किया। प्रो० त्रिपाठी ने विद्वानों को माल्यार्पण एवं अङ्गवस्त्रम् प्रदान कर सम्मानित किया।

डा० प्रणति घोषाल ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी का परिचय एवं कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया –

'कलातत्त्वकोश' के सम्पादन हेतु लगभग २६०–२६१ कलात्मक शब्दों का चयन किया गया है जिससे सम्बन्धित संदर्भपत्र तैयार किया जाता है। लगभग ७४ हजार तक संलग्नक संदर्भ पत्र तैयार है जिसमें आनुमानिक ७० हजार का आलोकचित्रीकरण हुआ एवं शोधार्थियों के लिये कार्यालय के Webpage में संलग्न कर दिया गया है। यह संस्था आरम्भ से लेकर आज तक चार निदेशकों की देखरेख में कार्य करती आ रही है। प्रथम निदेशक प्रो० बेटिना बॉमर १९८८ से १९९५ तक कार्यरत रहीं। उनकी देखरेख में कलातत्त्वकोश प्रथम खण्ड से लेकर तृतीय खण्ड तक का प्रकाशन एवं कार्य हुआ। द्वितीय निदेशक प्रो० आर०सी० शर्मा १९९५ से २००३ तक रहे। उनके निर्देशन में कलाकत्त्वकोश चतुर्थ एवं पंचम खण्ड प्रकाशित हुआ। तृतीय निदेशक प्रो० विद्यानिवास मिश्र २००३ से २००५ के कार्यकाल में छठाँ खण्ड प्रस्तुत हुआ। चौथे निदेशक २००७ से आज तक प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी के समय में ही यह संस्था क्षेत्रीय संस्था घोषित हुई। २००८ में कलाकत्त्वकोश षष्ठ भाग प्रकाशित हुआ। दिसम्बर, २०१५ में 'कलातत्त्वकोश' सातवां खण्ड प्रकाशित हुआ। इस समय यह संस्था कलातत्त्वकोश, नाट्यशास्त्र, भारतीय सान्दर्यशास्त्र, वाक्यपदीय आदि विषयों पर विभिन्न विद्वानों के निर्देशन में कार्य कर रही है।

प्रो० कौशलेन्द्र पाण्डेय, जो कि साहित्यशास्त्र और नाट्यशास्त्र के समकालीन विद्वानों में प्रमुख कहे जाते हैं, ने अपना व्याख्यान आरम्भ करते हुए संस्मरणस्वरूप कहा कि रणवीर महाविद्यालय, वाराणसी में अध्ययन काल से ही वेणीसंहार नाटक इत्यादि रंगमंच से जुड़ने का अवसर मिलता रहा है। बाद में सन् १९७६ में 'मालविकाग्निमित्रम्', १९८० में 'मुद्राराक्षस' इत्यादि नाटकों के माध्यम से 'अभिनवभारती' की प्रशंसा होते सुनी जिसमें आचार्यों का सप्तर्षिमण्डल विश्वविख्यात हो रहा था, उसमें वाचिक अभिनय के श्रवण का अवसर प्राप्त हुआ।

नाट्योत्पत्ति के नाट्यशास्त्र में वर्णित आख्यान का सन्दर्भ देते हुए उन्होंने कहा कि त्रेतायुग में जम्बूद्वीप के लोगों के ईर्ष्या, लोभ, मोह से यज्ञकर्म के ह्रास होने से महेन्द्रादि देवताओं का भी ह्रास हुआ। अत: देवताओं में इच्छा जागृत हुई कि कोई ऐसा कार्य किया जाय जिससे लोगों में धर्म के प्रति रुचि और विश्वास जागृत हो। फलस्वरूप नाट्यशास्त्र का आरम्भ होने की आवश्यकता हुई। प्रो० पाण्डेय ने इस आख्यान की व्याख्या वेद की दृष्टि से करते हुए आगे कहा कि नाट्यशास्त्र के आरम्भ में देवताओं की सूची में गणेश देवता का नाम नहीं है। यहाँ देवताओं की सूची में अश्विन् एवं वास्तुदेव का भी नाम नहीं है। भरतमुनि ऋषि परंपरा के हैं। ऋषि आठ प्रकार के कहे गये हैं। अत: आत्रेय आदि ऋषिगण ने भरतमुनि से पाँच प्रश्न पूछे थे –

''नाट्यवेद: कथं ब्रह्मन्नुत्पन्न: कस्य वा कृते । कत्यङ्ग: किं प्रमाणश्च प्रयोगश्चास्य कीदृश:। सर्वमेतद्यथातत्त्वं भगवन् वक्तुमर्हसि॥''

अर्थात् यह नाट्यवेद किस प्रकार उत्पन्न हुआ? किसके लिए उत्पन्न हुआ? उसके कितने अङ्ग हैं? उसका क्या प्रमाण है? और उसका प्रयोग कैसे होता है?

अत: भरत और आत्रेयादि की संगोष्ठी के साथ ही नाट्यशास्त्र का आरम्भ हुआ। 'इतिहास: पुन: सृष्ट:' इस दैवी व्यवस्था के साथ ही यह पंचम नाट्यवेद है। इन प्रश्नों के अतिरिक्त भी ऋषियों के कुछ और प्रयोजन रहे होंगे। अत: सभी प्रयोजनों की सिद्धि वेद से ही है।

उन्होंने नाट्यशास्त्र में प्रतिपादित एकादश विषयों का उल्लेख किया – जो संग्रहश्लोक में गिनाये गये हैं। वे एकादश विषय हैं – रस, भाव, अभिनय, धर्मी, वृत्ति, प्रवृत्ति, सिद्धि, स्वर, आतोद्य, गान तथा रङ्गभूमि। इसके साथ ही विद्वान् वक्ता ने बतलाया कि नाट्यवेद वेद से आहृत तत्त्वों से ही निर्मित है। उसमें ऋग्वेद से पाठ्य का ग्रहण हुआ, क्योंकि ऋग्वेद स्वर-प्रधान है।

'कत्यङ्ग' से नाट्य के ऊपर वर्णित रस भाव, गीत, वाद्य, नृत्य, अभिनय आदि अङ्गों को लक्ष्य किया गया है।

वक्ता ने कहा कि शक्तियां के दो प्रकार हैं। अथर्वा और अङ्गिरा। अथर्वा से शरीर का संचालन होता है। यह औषधिपरक है तथा अङ्गिरा वाचिक है। अत: वाचिक और आङ्गिक अभिनय के अङ्ग हैं। सात्त्विक अभिनय का मनस् से सम्बन्ध है और आहार्य्य अर्थात् वेशभूषा, अलङ्करण आदि आहृत तत्त्व हैं।

बगलामुखी (पीताम्बरा) शक्ति वाचिक लगाम से किसी को भी वश में कर लेती है।

बिना देवताओं के कर्मकाण्ड की उत्पत्ति नहीं होती। देवता परोक्षप्रिय होते हैं। शमी रामचन्द्र और करीर कृष्णचन्द्र हैं। उन्होंने भरत के १०० पुत्रों की तालिका तथा आठ अप्सराओं का भी विवरण दिया।

अप्सराओं में मञ्जुकेशी, सुनन्दा आदि आती हैं ये ऋषि परिवार से जोड़ी जाती हैं।

देवताओं में हैं पितामह, ब्रह्मा, महेश्वर, अग्नि, रुद्र, महोदधि। शिव को विरुपाक्ष भी कहा है। इन्द्र को शचीपति, देवराज, महेन्द्र कहा गया है।

मातरिश्वा – एक ऋषि भी हैं और नाट्यमंडप की रचनाओं से इनका सम्बन्ध है। मरुद्गणों के पिता रुद्र हैं। यम, विवस्वान्, सावर्णिक मनु काल आदि । काल का नाट्य में बहुत महत्त्व है।

नट, द्वारपाल, नियति, मृत्यु, काल इन पंच का समन्वय पूरे रंगमंच को दार्शनिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

इस प्रकार प्रो० पाण्डेय ने रस, भाव, अभिनय, स्वर, आतोद्य, गान, रङ्ग और मंडप इत्यादि वैदिक परम्परा के शब्दों को नाट्यशास्त्र के तत्त्वों से जोड़कर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया।

प्रो० विश्वनाथ भट्टाचार्य ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि नाट्य का कार्य मनोरंजन करना है। नेपथ्य से निकलकर जो भाव हमारे हृदय को आह्लादित करे, जिसे देखकर हम अपना सब कुछ भूल जाते हैं, वह नाट्य है। अत: भाव की प्रधानता पर जोर दिया। 'मृच्छकटिक' को प्रथम नाट्यग्रन्थ कहा। प्रो० पाण्डेय की नाट्य संबन्धी वैदिक विवेचन की व्याख्या पर विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि मीमांसकों को आपत्ति होगी। कला के उत्कर्ष के लिए रंगमंच की संरचना की आवश्यकता पर जोर दिया।

संस्था के परामर्शदाता प्रो० त्रिपाठी ने सभा के अन्त में अपने सम्बोधन में कहा कि नवीं सदी से काशी नाट्यशास्त्र एवं इसके अनुशीलन का विशाल केन्द्र रहा है। प्रो० भट्टाचार्य ने प्रयोग एवं शास्त्र पर कार्य किया और कराया भी। प्रसंगवश रेवा प्रसाद द्विवेदी सरीखे विद्वानों का भी उल्लेख किया तथा इस आयोजन को आचार्य एवं गुरु–शिष्य परम्परा का एक संकेत कहा जिसकी कड़ी में प्रो० भट्टाचार्य एवं आज के समय के प्रो० पाण्डेय उदाहरणस्वरूप हैं। नाट्यशास्त्र के पाँच प्रश्न ही प्रमुख हैं। भारतीय रंगमंच का मूल वेद में है। नाट्य में त्रैलोक्य का भावानुकीर्तन है। सारा ब्रह्माण्ड थियेटर में आ जाता है।

ग्रामणी – गाँवों मं रक्षा करने वाले देवता यही गणेश है। मातृकाएँ होती हैं। ये आगमिक देव हैं, इनका उल्लेख अगले अध्याय में है।

नाट्यशास्त्र की चार वाचनाएँ – कश्मीर, नेपाल, बम्बई, दक्षिण की है। पर शास्त्र का संस्करण एक होता है। क्या नाट्यशास्त्र का भी एक ही संस्करण है या अनेक? इस प्रश्न पर विचार होना चाहिए। यह एक गंभीर सांस्कृतिक एवं शास्त्रीय प्रश्न है। साथ ही प्रो० त्रिपाठी ने सबको धन्यवाद प्रदान किया। सभा में प्रो० मुखोपाध्याय, प्रो० एम०एन०पी० तिवारी, डा० एस० पी० पाण्डेय, प्रो० राणा पी०वी० सिंह एवं अन्य विद्वत्गण एवं अतिथिगण उपस्थित थे।

सभा का संचालन डा० रजनीकान्त त्रिपाठी ने किया।